दुःखक दुपहरिया

हमर किछु गीत-गजल सन' संकलन

गंगेश गुंजन



उत्तराधिकार

जाइत काल किछु नहि
क' गेलाह पिता हमरा नाम
घर ने खेत-खरिहान।
कहि गेलाह : "बाट चलैत काल
सतत् चलिह' बाम
तकर रखिह' ध्यान।
यैह द' गेलाह हमरा
पिता।
गंगेश गुंजन

दुःखक दुपहरिया

हमर किछु गीत-गजल सन' संकलन

गंगेश गुंजन

प्रकाशक :
क्रापीप्र
क्रान्तिपीठ प्रकाशन
अल्प आय फ्लैट सं० ३७, लोहिया नगर, पटना-८०००२०

सर्वाधिकार सुरक्षित :
श्रीमती सरिता झा

पहिल संस्करण : १९९९

प्रकाशक :
क्रा पी प्र
क्रान्तिपीठ प्रकाशन
अल्प आय फ्लैट सं० ३७
लोहिया नगर, पटना-८०००२०

आवरण शिल्पी :
(गंगेश गुंजन)

पुस्तक रूप सज्जा :
प्रचार प्रतीक
१०८-ई, पॉकेट-के
शेख सराय फेस-२
नई दिल्ली-११० ०१७

मुद्रक :
एजियन ऑफसेट प्रिन्टर्स
एफ-१७, मायापुरी
इन्डस्ट्रियल एरिया फेस-२
नई दिल्ली-११० ०६४

मूल्य : पचास टाका मात्र





मित्र प्रिय प्रभास कैं
जे हमर गीत "हमरा नहि सोर करू" कें युवालेखनक राष्ट्रगान कहैत आ सुनैत रहथि,
आ कनियाँ ज्योत्सना जी कैं
स्मृति अर्पित ई कृति

गुंजन

ई हमर गीत-गजल

ई संकलन स्वाधीन लयक हमर किछु छंदोबद्ध रचना सब थिक। किछु त प्रकाशित। बेसी अप्रकाशित। एहि मे सँ किछु गीत कहीं नवगीत– अगीत कहीं। गजल कहीं, गजल सन कहीं। एहि रचनाक मूल अनुभव– संसार बनल अछि– जीवन प्रचण्ड रौदकेर दुःख भरल दुपहरिया, तकर सघन तीख अनुभूति, भरि सरासरी संवेदना, माटि– पानि– बरसात मे अथक मनुष्योचित आस्था आ आत. एकर आत्मपरिणतिक अपन विश्वासक निष्कंप रचना– दृष्टि– भरी जे जीवन– विमुख होएबा सँ बचबैत अछि। तँ एकर नाम 'दुःखक दुपहरिया'।

पारंपरिक छंदोबद्धताक विद्ध मानदण्ड पर एत जे कोनो गीत–गजल भेटत त से अपने सहजता मे। तकरा पाछाँ कोनो प्रयास नहि कयलियैक–ए।
शास्त्रीय श्रेष्ठता–संवेदनाक स्नेही विद्वान एवं कवि प्रोफेसरक मानदण्ड पर जतहु–कतहु कोनो रचना बेछप लागय, तँ से काव्यशास्त्रीय दोष शिरोधार्य। अभिप्रायपूर्वक कयल गेल छैक। साहित्यिक त मेहनति क' क' हमहूँ मात्रा–तुक–छन्द–विधान आनि सकैत छलियैक, मुदा से हमर गीतकार मन केँ स्वीकार नहि भेल। ओहिना छोड़ि देबे ईमानदारी बुझायल। तँ एक
आध ठाम एकहि शीर्षक रचना मे मात्रा भेद अखरत परंतु कृत्रिमता सँ बचबा लेल, हम ई जोखिम उठा रहल छी। हमर कवि–मनक लाचारी।

अपन पहिल गीत रचना सँ ल' क' आइ धरिक किछु बेसी मन परिन्न हमर गीत–गजल एहि मे अपनेक सम्मुख।

आभार!

अभिलषित स्वरूप मे ई संकलन नहि आबि सकैत जँ डा. रमानन्द झा रमण, डा. देवशंकर नवीन सदृश स्नेहीक सहयोग नहि भेटैत।

सर्जना– शैलू बाबू, बौआ कुन्नू, आ सभक जड़ि हिनकर माँ अर्थात् सरु दाइक स्नेह–संरक्षण नहि भेटितय तँ कहाँ सँ अबैत ई पोथी।

कलाकार चि. शान्तनु पांडे एकर छपबाक सभटा भार कलात्मक संलग्नता आ' अपनत्व सँ ऊघि रहल अछि। तँ शानू कैं बहुत आशीर्वाद तथा मुद्रण सँ जुड़ल सभ प्रेस–बंधु के धन्यवाद।

ई संग्रह हमरा जीवनक अत्यंत विशेष संदर्भ बनल। चारि जून, बौआक जन्म दिन, आ विवाहक शुभ अवसर पर तइस जून ६६ क' प्रकाशित भ' रहल अछि। हमरा जीवनक शिखर–सुख सन मे स्मरणीय रहत।

शुभ अवसर कैं आशीर्वाद।

गंगेश गुंजन

सेक्टर–४/१०१६, श्री रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली–११० ०२२

कविता क्रम

गंधहीन फूलक मधुमास

किछु लिखल छल अहाँक नाम सँ
किछु लिखल हमरा नामें
मरुस्थलक बालुक सँ कागज
        अपना दुनूक गोटेक नामें।
आधा दूर पसाही पछबा
आधा पसरल बन खजूर
पूब सँ दाही पच्छिम अन्हर
        लिखल दुनू गोटेक नामें।
बाँझ गाछ चतरल अन्हरिया
गंधहीन फूलक मधुमास
पात-प्रात केर झरकल हरियर
        यात्रा दुनू गोटेक नामें।
निरगुनियाँ दर्शन सन प्रतिपल
दुनू गोटेक मनक आधार
अपनहि घर मे अनचिन्हार
        अधिकार अहँक हमरा नामें।
जीवन थिक यात्रा दुक्खे दुःख
कहइत अछि किछु लोक-समाज
लोक मुदा तैयो हँसैत अछि
        दुनू गोटेक दुःखक नामें।
किछु बूझल छल अहँक मन कें
किछु स्वादल छल स्नेहक धार
दुनू गोटेक सपना दहा रहल
        अनचिन्हार गामे-गामें।
किछु लिखल छल अहाँक नाम सँ
किछु लिखल हमरा नामें
मरुस्थलक बालुक सँ कागज
        अपना दुनू गोटेक नामें।

बिन कहल गीत अमूर्त्त

नहि बूझल भेल
देह, श्वास प्रान
सभ त' छल अपनहि लोक अपन-आन।

बैसल-बैसल बाट देखैत बुंदपात
भीजल मन सतत,
भरल साँझ-प्रात
खसल कौखन चिड़ै जकाँ
भेल झुर अमान
नहि छल अप्पन तखन ने कतहु कोनो आन।

सभ यात्रा कयलक कात कात
हमरा काँट-कटैया बनि क'
घेरने रहल किछु बात
बंद रहल हमरा लेखें
दरबज्जा आ दलान
अपने त' मृतप्राय. देलक ने हुलकी कयो आन।

पिहकारी आ अट्टहास
घूमल सब गामे गाम
जड़ता बटवृक्ष महा ठाढ़ टाम-टाम
निभरोस आँखि मे थथकल
दुनिया आ जहान
दुःखें कोइली टूटल भरलक एक तान

कात मे करौट लैत रहल अनचिन्हार. अप्पन आन।

लेभरल अरिपन सन सबहक नजरि

ससरि गेल छू क' इतिहास बहुत रास
सभ कान्ह पर जरैत तरहत्थी भरि
लेभरल अरिपन सन सबहक नजरि
जतेक रंगक बीतल दिन-राति सभ
सुनगि-सुनगि दुखा जाइछ मनक ओ बात
मन अपनहुँ त' ई बुझौअलि भरि।
ससरि गेल छू क' इतिहास बहुत रास।
छाती मे एक "मकबरा" भरि स्मृति
आँजुर मे एक मरुस्थल भरि बालु
आँखि मे एक आकाश भरि रिक्तता
भरि धरती अंतर हृदयक निसबद्दता
जे अप्पन लोक गेल संबन्धी सभ छोड़ि।
ससरि गेल छू क' इतिहास बहुत रास।
घून खायल सभक सभ प्रतीक्षा
टाम-टाम ठाढ़ भेल ठुट्ठ स्नेह
मुँह नुका क' भागि रहल लोक सभ
सुखल नदी पर किछु बालुक घर
गेल सोखि समय एकर धार बहुत रास।
ससरि गेल छू क' इतिहास बहुत रास।
सतरंगा छपुआ सन मृदु बिहुँसी
झरकि गेल आँचरक किनारी सन
घन अन्हार मे कएल किछु संबोधन
अछि हेरायल टूटि गेल आसरा सन
आगू अछि महल फेर बनयबा लेल
एक संग ठाढ़ अछि ताश बहुत रास।
ससरि गेल छू क' इतिहास बहुत रास।

एकटा पारिजात अहाँक नाम

हमरा नहि सोर करू हमर बाट काटल अछि
गामक सिमान जकाँ हमर मोन बाँटल अछि।

सीपी मे बन्द मणि अहाँक स्नेह
भोर-किरण सूर्यमुखी अहँक देह
करिया पहाड़ तऽर, प्राण हमर जाँतल अछि।

एक गोट पारिजात अहाँक नाम
एक टा बबूर-वन हमर गाम
दुनू गोटक बीच समय निरसा सँ मातल अछि।

अहीं प्रेम-आँखिक अमर भाषा
हम कंठ मोकल सन-अभिलाषा
अन्हरिया डोरा सँ प्राण हमर गाँथल अछि।

गामक सिमान जकाँ हमर मन बाँटल अछि।

गाम कें प्रणाम

कविता हम कहब अहाँक नामक
हम गीत गायब अपन गामक
टूटल-फाटल घरक चार-टाट
भम पड़ैत बड़ उदास सुन्न बाट
डेगे डेग चिन्ताक धूरा उड़ैत
बिरड़ो मे घुरमैत सुखायल पात
वर्णन नहि हो, दिनक दलानक
हम गीत गायब अपन गामक।
बनि गेलय जेना कोनो अनठीया देश
अनचिन्हार भेल सभक सभ परिवेश
चानन काका, ननकू भायक मुँह
सभ जेना धने हो साधुक भेष
कनैत घरे घर स्वर समदानक
हम गीत गायब अपन गामक।
घरे घर कलमछ नवतुरिया लोक
रेल मे कटल बेटाक पुत्रशोक
स्वप्न डाहि जीवैत पड़ल गूनल
सभ कंठ एका एकी मोकल
सएह करुण कथा सब जवानक
हम गीत गायब अपन गामक।
लागल पजरल जकाँ एक-एक हृदय
उजरल उपटल सन एक-एक टोल
गाछ निपात सूखल पोखरि-इनार
फेर अकाल छोड़ि गेल उपास अन्हार
खिस्सा ई कमला-बलानक
हम गीत गायब अपन गामक।



मुक्तक:

अहँक जीवन हमरे जकाँ पहाड़ रहत
हमर ई मन सेहो राति-दिन अन्हार रहत
जं क्यो सुनत कहियो ककरो सँ ई खिस्सा
दुनू गोटं कें सं एक रंग बताह कहत।

प्राण-पाती : छःपाँती:

मन किछु पड़ैत अछि उदास सन
काँपि-काँपि जाइत छी बसात सन।

आँखि में अछि ओ मिझायल चन्द्रमा
सिहकैत अछि साँझ हमर प्यास सन।

कन-कन करै-ए बाँहि मन प्राण
हाथ बान्हल जीवैत लहास सन।



एक

अहीं कहू जे अहीँक बात हम कोना मानी
जे लोक हित विरुध्द, बात से कोना मानी।

ओना त दुःख बहुत रास अछि अहुँक मन में
मुदा से खास दुःखक बात हम कोना मानी।

जे गीत एकसरुआ एकान्ती बात करय
से गीत खास अपन बात हम कोना मानी।

अहाँ उदास कियेक मने मे गाम बसाउ
कोनो टा घरजाना बात हम कोना मानी।

जे फूल, गाछ, पानि, पवन, बन्द हो एक ठाँ
से बन्द जीवन केर बात हम कोना मानी।

नदीक धार जकाँ बस्ती-बस्ती पीबय
बनी तँ बात, नहि तँ बात हम कोना मानी।

अहाँ आ हम दुनू कात रही अनुरागी
हृदय में धार बहय-लोकगीत हम गाबी।

जे सभक मनक अन्हरिया नहि दूर करय
से वेद वाक् भने, बात हम कोना मानी।

दू

सुनू अहूँ ई हमर मनक उद्गार सुनू
अही मे लोक वेद सँसे संसार बुझू।

ओना उदास तँ हमहुँ रहै छी अहीं जकाँ
तही उदास मनक एकरा उद्गार बुझू।

समय टहकि-बड़कि कँ पसरल अलकतरा सन
तही जरैत सड़क पर हमरा ठाढ़ बुझू।

अपन ई आँखि, एकर फूल, गीत केर खातिर
ई प्राण जायत हमर, हमरा तैयार बुझू।

अहाँक गाम जकाँ हमरो अछि गाम एकटा
अपन तँ गाम सँ हमरो अछि बहुत प्यार बुझू।

महान संस्कृति, विद्या, आदर्शक गौरव
ढहल-ढुहल बिना इसकूल पिलखवार बुझू।

सुखायल कमला केर भूख-प्यास सँ कछमछ
करैत आबादीक जिनगी पहाड़ बुझू।

रूसलि कमला केर धार पिलखवार जकाँ
एतक लोक सभक जिनगी कहार बुझू।

हमर अदूल सुखा जाय से छै ओरियाओन
मुदा अहाँक सपत हम छी तैयार बुझू।

हमर समाद कें अकानि रहल अछि मौसिम
समाद गौआँ ओ दिल्ली-दरबार सुनू।

सुनू अहूँ ई हमर मनक उद्गार सुनू
एही मे लोकवेद सँसे संसार बुझू।



तीन

अपन दुनूक कतेक असकर जवानी अछि
अपन दुनूक केहन दुख भरल कहानी अछि।

ने कहि सकी ककरो अप्पन मोनक ममता
कते लाचार छी अप्पन केहन पिहानी अछि।

जखन सँ साँझ, फूल बूझल हजोरिया भेल
केहन बताह तखन सँ ई जिन्दगानी अछि।

उदास पसरल संसारक एकान्ती मे
जे बाजि सकलहुँ नहि सैह बौक बानी अछि।

टोल भरि पसरल दुःखे हारल दुपहरिया
तकैत बाट पर अपने दुनूक निशानी अछि।

तखन फूलक लाथें कोखन तोड़य तुलसी
अहाँ बिना हमर आँगन केहन बिरानी अछि।

चारि

गीत अनर्गल व्यर्थ गजल
कविता कविक प्राण अँटकल।

अन्तरिक्ष चिन्तन अधिकांश
बीच बाट पर खाधि खुनल।

सुखक इजोरिया कैद कतहु
गाछ रोपल रस बाँझ रहल।

क्रूर रौद धरती फाड़ल
परती बिनु फसिलक पड़ल।

अंह-धाह पसरैत घोर अकाल
रूसल मेघक गंगाजल।

छहरि बिनु पैंचिक पियास
फुनगल गाछ सुखाह जरल।

टोल मजूर पड़ैत कन्ना
भूखें बच्चा कानि रहल।

के जानय ई अकाल कियैक
आबहु अधिक वर्ष बनल।

कवि गणेशक मन औंठ
तँ दुर्भिक्षक विषय कहल।



पाँच

मन हमरो एना बताह नै होइत
जँ जिन्दगी मे एना गाह नै होइत।

हमहुँ पति की लोकक खातिर
हमरो दुनिया एना तबाह नै होइत।

से बात आर किछु नै कोशिश छल
हाथ हमरो एना अबाह नै होइत।

से केहन खास भी सबके छल सफर
ई अहाँक मन मे एना डाह नै होइत।

आगि लागल कोनो की अहींक घर
संग रहैत एना सुडाह नै होइत।

गम खकस्याह होइत चलल गेल
बाँचि जाइत तँ एना धाह नै होइत।

आब उतरल छी एकसरे कोशी
संग बहितहुँ तँ ई अथाह नै होइत।

छ

कहल-सुनल माफ बंधु
सब हिसाब साफ बंधु।

एहिना चुपचाप सहो
भरि जिन्दगी श्राप बंधु।

अध रस्ते छुटलहुँ जें
तकरे संताप बंधु।

तिल-तिल ई केहन भोग
स्नेहो भेल पाप बंधु।

दुःखे दुःख पसरल अछि
आगाँ भरि बाट बंधु।

प्रत्याशा मे पजरल
मोनक परिताप बंधु।

अर्पित अन्हरिया कें
क्रोध साफ-साफ बंधु।

जीवन-खेला मे बेस
गुन्जनक निसाफ बंधु।

सात

स्नेह मे समझा रहल छथि
जिन्दगी सँ जा रहल छथि

एक सम्बोधन छोड़ाक'
नव नाम बना रहल छथि

एहि सरिता कें सुखा क'
आन धार बहा रहल छथि

प्राण लेने जाथि जे, से
भरू धैर्य बुझा रहल छथि

हम चुपे छी क्षुब्ध दुनियाक
वचन सँ बहला रहल छथि

नेह सँ समझा-बुझा क'
जे अपन घर जा रहल छथि

केहन करुणाहीन जीवन
सौंपि क' से जा रहल छथि।



आठ

जीवन कहाँ छल कहियो एहि रंग मे उदास
साँझों मे जल शीतल लागल रहय पियास

जीवन कहाँ छल कहियो एहि तरहें के रंग
मनक सरस सब कल्पनाक उड़ि गेल-ए रंग

जीवन कहाँ छल कहियो उपलक्ष्यहीन दिन
सबटा हो सरंजाम चुमल फुरा हृदयहीन

जीवन कहाँ छल एहन रात एकसर एना एकांत
हो चारु कात स्निग्ध शान्ति, अन्तर अशान्त

जीवन कहाँ छल तेहनो टूटल ढहल देवाल
जीवन कहाँ छल कहियो खसल एना बेहाल

जीवन तँ छल कहियो सुन्दर मनक हरिण
ई कहाँ छल अइ सभी हतप्रभ कंगाल।

नौ

(गजल निर्गुनिया)

जानल दुनिया
मन निरगुनिया।

ई जग लोभी
नेह दुलहिनिया।

मनक धुन पर
तन हरमुनिया।

मोनक पिंजड़ा मे
प्राण झुनझुनिया।

भेल बिदागरी
चलि गेलि कनिया।

बाट उदासी
एक निरजनिया।

बूझल दुनिया
मन निरगुनिया।



बारह

नहि पूछू एहि शहर केर बात किछु
जरि रहल अछि राति-दिन ई गमे मन।

मिझरवा केर ईलिआमें छै मिझायल
के बुझय से दुःख सँ झरकैल तन।

चलैतछि ओहुना बसात किछु तेहन सन
सड़क कें पर्यत उठल छै अगन।

आब त कहितो नै छै कयो कोनो बात
एत' धरि जे नगर केर गंगा, पवन।

कठिन अछि विश्वास करब बात ई
अछि गवाही मुदा कविता, हमर मन।

कोना झरकल गेल ई गौतमक नगर
कोना कुदरुप भेल शब्द अक्षरक तन।

तेरह

(बाढ़ि)

दुःखक दा सिलसिला अछि आ जी रहल-ए लोक
अकस्य मे चैन निल कष्ट पी रहलए लोक।

घर डहा गेलैक बाढ़ि मे बच्चा समेत सब
सड़कक कात पशु बनल जी रहल-ए लोक।

एक्हु साँझक खोराक नहि अगिला फसिल धरि
जीवा लेल ई लाचार कोना जी रहल-ए लोक।

सभ किछु गमा क' भागि क' टिल्हा पर ऊँच मे
फूटल फेंकल बासन जकाँ हद मे रहल-ए लोक।

गले पहिरना अंछाओन जकाँ छैक ओढ़ना
जबकल गन्हाएल पानि खा आ पी रहल-ए लोक।

सभ वर्ष जकाँ एहू बाढ़ि मे कारप्रदार
रिलीफ नामे अपन जेबी भरी रहल-ए लोक।

चलि तँ पड़ल-ए जीप-ट्रक बोटक ई काफिला
ताही रिलीफक आस मे बस जी रहल-ए लोक।

कहि तँ गेलाह-ए परसुए दस टन बँटत अनाज
अखबार-रेडियो भरोसें जी रहल-ए लोक।

थापैत तँ छथि देश मे पर्याप्त अछि अन्न
मुदा गोदाम मे हुपरस जी रहल-ए लोक।

उमेद भे जे आब अजीत संस्था स्वयंसेवी
द' जाबत बासि रोटी दान, जी रहल-ए लोक।

बड़ कठिन अछि समय एहन ई राक्षस अन्हार
किछु भ' रहल-ए तय आ तँ तँ जी रहल-ए लोक।

चौदह

रच्छ जे प्राण एखन बाँचल अछि
ओना तँ आर किछु ने बाँचल अछि।

देखि क' एहि समाजकेर रंग-ताल
आब मनोरथ ने कोनो बाँचल अछि।

बैसी कलाह आ मनक गप्प करी
टोल मे दोस्त कहाँ बाँचल अछि।

नोर दुर्दिन मे लग ठाढ़ हो जे
से तेहन लोक कहाँ बाँचल अछि।

खढ़ सँ कोंच पकेआ तखन सिमेंटक घर
बनि गेलय, घर कहाँ बाँचल अछि।

भेल खत्ता सभक बड़का पोखरि
आब भथल इनार बाँचल अछि।

ओना तँ बाट खरंजा बनि गेल
मुदा आब गाम-गाम बाँटल अछि।

स्नेह केर दीप बड़ काँपि रहल
तेल पानि मे सड़ल बाँचल अछि।

भरि हृदय गप्प, हँसी पिहकारी
भेल की, टोल कोना बाँचल अछि।

आब गाम-गाम अस्पताल लगै-ए

एहु बर्ष ओहिना बसात बहै-ए
बेर-बेर किछु ने किछु बात लगै-ए

जे किछु परिवर्त्तन सब अखबारी भेल
सरकारी तंत्र जंग खायल लगै-ए

जनता केर संकट आर विपत्तिक दिन
आरो किछु बेशी गझायल लगै-ए

मैसिमक हो अन्हार आ की हुनकर
एकहि रंग दुनू मिझाएल लगै-ए

चढ़ैत अकाश पर अन्न सभक दाम
सभटा दोकान अनचिन्हार लगै-ए

तावकू मटिया सँ झन-झन बजै-ए टीन
तेँ आब बेशी घर अन्हार लगै-ए

जहर सँ भरल देह आ घोर मनोरोग
आब गाम-गाम अस्पताल लगै-ए



दिन तबधल तऽब

दिन तबधल तऽब,
देह दुपहरियाक रौद
छाहरि ताकि ताकि ई प्राण

बालु खानेड़िक उलाइत अन्न

देथि शुभेच्छु स्नेह-सुझाव-

औ गुंजन जी रहू प्रसन्न,
देह थिक सृष्टि सँ व्यवहार
समयक कनियाँक बनू कहार

सजल पालकी कथैत जाउ
मँसिय सब सँ जुनि अगुताउ
जेठ-श्रेष्ठ केर आशीर्वाद,
छत्ता तानल माथ उधार।

पानिक नहि, पसेनाक धार
चूबय टप-टप अपन कपार,

अनुभव सँ पाकल सब लोक,
जीविताहि हमर मनाबथि शोक

जीवाके जँ ई रहि गेल हव, हकन कनैत भरि जन्म रहब।

अप्पन छी तेँ उचित कहब-
बदलू बाट आँखि बदलू,

गाछक छाहरि मार्ग चलू
बहुत गोटय भेटत ओहि ठाम

आदर्शक बात छोड़ू,
मात्र शब्द धरि लऽ ओढ़ू
मन परिस्न सुविधा लोढ़ू

ई समय छोड़ू सिद्धांत, बेमतलब थिक वेद-वेदांत

बाँकी बेश, रहओ सिद्धांत-
पोथी मे, किछु अवसर पर, मंच, सभा मे, किन्तु ने घर
साँसे शीतल-शीतल छैक, रौद ने बेश इजोरिया देत

ठेहा ठेही उज्जर मखमल
हरियर घनगर गाछे गाछ
मंद पवन सुरभित सब बात
जुनि झरकाउ, रहू स्थिर
बड़ अमूल्य थिक इहो शरीर

तीन टा दू-पाँती

कोना कुर्सी ने कोनो इल्म छनि कि अनुभव छनि
उठैत लोकक नव आकांक्षाक अनुभव छनि

सहैत जाइत छी सब दिन बेगारी बेमोने
तकर कलेश, अभाव, दुःखक ने अनुभव छनि

ओना कहैत छथि ओ बुद्ध पुरुष जे सब टा हैत
मुक्त से हएत कोन मूल्य पर, ने अनुभव छनि

मुक्तक : एक

सस्त अछि ई मन औनाइ लेल
महग बड़ आपानी विश्वास
बिन अपने चलब ओंघलब धिक
स्नेह बनल आहिया उच्छ्वास।

मुक्तक : दू

नदी नाह वाढ़ि दहाबन्ध बस्ती
करुणा एहिना निष्फल आर व्यर्थ
छपि-छपि क' बहैत जाइत रोग एकबार
सभ प्रात गाम-घर धार नर।

मुक्तक : तीन

सस्त अछि दुःख गाथा
निर्गाश्लक गुँह बनाने
लगातार अनुवादित जाइत मनुक्ख
नकली सब खिस्सा-पिहानी।



करइथ नेतागण भाषण मनुष्याभास

भेटला हैरी रास देशकेर गीत गवैया
मुदा भेटे छथि कहाँ एकर गढ़य वाला
बड़ घोखल जाइछ एकर रक्षा-रक्षा
लूटि रहल एकरा रक्षा करयवाला।

आदर्शक माला तँ बड़ गाँथल जाइछ
कर्मपुष्प केर पँखुरी सब नोचल जाइछ
पाठ एकता केर देशक जे पढ़ा रहल
सैह लोक देशक गाछक जड़ि कोड़ि रहल
शिक्षा, समता आ श्रमकेर महिमा गबैत छथि
सैह अपड़-असहायक कंठ मोकैत रहैत
छथि

गणधर्म निक अहर्निक नगहर इतिहास
करइथ नेतागण भाषण मनुष्याभास
एकरा टुकड़ा देल धर्म केर आगि बारि क'
एकरा कुंठित मारल व्यक्तिक जाति-स्वार्थ सँ।
बेशी लोक तँ छथि एहि मे ढोलपिट्टा गायक
अप्पन व्यक्तित्व देशक दामे छोड़यब वाला।

दुपहरियाक रौद मे

एत' 'ओत' जत' सतय
एकहि रंग उदासी
चमरल अट्टहास करैत
कमलेश्वर काशी

पेट भेल अछि धनुष
भूख बेरोजगारी,
नेताकेर अधर मे लटायल युवा पीढ़ी-
सेवारत क्रीत दास क' रहल खवासी।

वीसम सदीक एहि उन्नत जनतंत्र मे
सत्ताकेर राजनीति-
मंदिर मसजिद धर्मक ठीकेदारीक
पौसुआ मधुमाछीक
मधुक व्यापार करय
पटना करांची। सभ टा देशक नामे।

कतय प्रवासी-
समड़ कहन अलह दुःखक
लोक बेद बिकल व्यग्र अपना अपनी
उनटल नावक लोक जकाँ भँसैत धार
हाथ पैर मारि मारि-
सुख सँ बचबा लेल डूबि रहल
ऊब डूब करैत
मृत्युमुखी छोड़ैत उसाँस।

धह-धह महगीक पजार
डाहि-डाहि गाम गाम
कतेकोक एकचारी मे सूतल नेना समेत
कपरल मुखाह, बच्छा-गाय।
बोनिक दू सेर कोनो अन्न-
मसुरी कि मड़का राहड़ि आ' कि खेसाड़ी
सब टा खकस्याह करैत।

मात्र वर्ष सैंतीसक एक तरुण
बंसी आजादी कें तबाह करैत-
मात्र ओ बन्दूकख सन लगैत व्यवस्था।

तथापि जयनगर सँ दिल्ली धरि छवैत
घोषैये तनिये जनकल्याणी उपक्रम
नव अर्थ कर्मसूत्र बीस-बीस
बर्ख सन् उनैस सय चौरासी।

आय मुदा बौक बहिर जनता नहि सुनैये
एहन लोकतंत्रक दम्भा उकासी
चुपचाप पेट हाथ बान्हि क' अकानि रहल
बनल साक्षी आ' तैयार-

दुपहरियाक रौद मे,
नव पनगल छोट छिन गाछक छाहरि मे
एका एकी जमा भ' रहल किछु हकासल पियासल
मुक्तिक प्रत्याशी
विपत्तिक रौद कें बिलमबा लेल
किछु गोटय एक टा
नव गाछ तर।

विद्यापतिक नोर

देसिल बयना सबजन मिट्ठा
बेश बनि गेलय हँसी ठट्ठा
भाषा आर मैथिल जनता केँ
पड़ल भरना कट्ठा कट्ठा।
नेता एखनहुँ मंचक धरनि
हुनका नहि किछु करय पड़नि
खाली पुजबथि पैर लोक सँ
मोटगर फूलक माला गर्दनि।
भाषण-भूषण बेश उच्च स्वर
द' सकैत छथि पहर दू-पहर।

मुदा न चिन्ता असली बातक
सैकड़े सत्तरि एखनहुँ नहि घर
शिक्षा, भोजन-वस्त्रक बात
जन-जन केर एहि कष्ट सँ कात
अपने जीबथि रहथि सुभ्यस्थ
कियेक सहथि क्लेशक अवघात ?

तैयो बजैत नोराइत आँखि
बजैत बजैत ग' र धरि जाइति
लोकक दुःख कहितं-कहितं
सपरिवार सुख मे रहितं।

लोक-प्रेम कहलनि सुड्डाह
अपन स्वार्थ जनता केर प्राण
कतखन भाषा कखन धर्म
लड़ा भिड़ा जीयब छनि कर्म
फूसिक भेदक ऊँच देबाल
ठाढ़ करथि फोड़थि दस लोक

शुष्क हृदय, जनता बौआय
भिखारी बीच माथ फोड़ाय

सभ समस्या ठामक ठाम
बढ़ल बेरोजगार अथाह

भेल अछि मिथिला भागक गाम
डिग्री चिचिआहट अछि काम

कोड़ा लगैत प्रतिभाक विलाप
कयो ने सुनय दिअय नहि कान
पैंतीस छत्तीस वर्षक ढहल
लोक ने लखनहुँ भेल जुआन
ई हाहाकारक परिवेश
जरैत आगि मे सौंसे देश।

तेँ से लोकेँ विकासक आगि
लाड़िलहि सहज, रहत की शेष ?
के अनकार अछि के अपन
ई समाज कहैन अवदान
अछि ने सुरक्षित भोजन-वस्त्र
आ' ने निरापद लोकक प्राण।



राजनीति केर दाव मे मारू धोबिया पाट

कलंक कहबनि कहि दियनु ओ नहि देता कान
अपन स्वार्थक ध्यान मे ओ छथि बनल अकान।

भोर-साँझ दुपहर भने रहू अहाँ बेचैन
ओ पुछताह औ बंधुगण किनका भोट देबैन ?

अहाँक पसेना अहाँक देह झुनकर की छनि हानि
सब विचार बनि गेल अछि सत्ताक पएर धोआइनि।

साँसे गामक भुखमरी साँसे गामक आहि
छथि नेता एहि क्षेत्र केर मुदा कोन परवाहि ?

वाणी मे किछु कहि दियै बड़ दिव भिक पाखण्ड
समय सुतारू राजनीतिक नेते बनल अखंड।

राजनीति केर दाव मे मारू धोबिया पाट
खसय चित्त जे खसि पड़ओ अहाँक खुजय बाट।



बहय एहिना बसात बुधियार

बहय एहिना बसात बुधियार
लोक पर एहिना करय प्रहार
बहय एहिना बसात बुधियार।

विचारक पसरय अन्हरजाल
घोषणा आश्वासन केर टाल
वर्ष, दिन, पल लचरल जाय हाल

बहय एहिना बसात बुधियार।

नित्य बैसय ठाम-ठाम सेमिनार
सेठ आ साहु कें पड़य हकार
पँचतारामे पर्व-तिहार

बहय एहिना बसात बुधियार।

देल जाय जनता कें चोटी
सुखायल लाचारीक रोटी
अनाजक फोटो करू अहार

बहय एहिना बसात बुधियार।

लोक धरती पर सँ उठि गेल
आब भोटक लिस्ट बनि गेल
बनल योजना-मड़फाक अहार

बहत एहिना बसात बुधियार।

चेतायब कविक शब्द औ लोके
बनू निर्भीक सजग निधोख
नहि तँ एहिना रहत कपार

बहत एहिना बसात बुधियार।

अहींकेर घाम आ शोणित सँ
अहींक विरुद्ध चलत व्यापार
कहल जायत सब थिक अहींक

मुदा नीलाम रहत आधार।

रहब सब अन्हरिया मे ठाढ़
सहैत सामन्तो घात प्रहार
आँखि केर ज्योतिक करू प्रसार

करू औ लोक-शक्ति तैयार
बन्द हो ई बसात बुधियार।

जीवन जे कहि रहल

सुनू बंधु, जीवन की कहैये
लोक आब नोरे मे बहैये।

चुप बहिर गाम-गाम घर सब मे,
अंतर नहि जागब मे सूतब मे
अपनहि आँखिक अन्हार सहैये।

कए-कए हाथक मिझा रहल मशाल
प्रतिदिन ओझरबैत एक जाल
अभिदिया हरिन-पैर सन मनक
नित्य अनन विश्वासो फँसैये
सब सुख तकलीफे कसैये।

पड़ल दु धर बीच एकपेड़िया
एकाकी सुनसान प्रेत धरती
कटल एक गुड्डी ईमनदार हँसी
अपनहि आगाँ मे सब किछु देखू
खढ़ पात केर महल कोना कऽ ढहैये।

आदमी आब किछुओ नहि कहैये
नोरे मे बहैये
चुपचाप रहैये।

संकल्पक चामर

एह् वर्ष ओहिना बसात बहै-ए
घेर-घेर किछु ने किछु बात गढ़ै-ए।

माटिक गमकैत फूल आँजुर भरि कें
अन्चोके खिड़की केबाड़ हिलै-ए।

देखि रहल स्वप्न जेना आनक घर मे
सूतल चेतनाक समाद कहै-ए।

दूभि-पात, गाछ, गीत सहमि गेल सभ
एहिना सभ गनि-गनि आघात सहै-ए।

भुतकल छै पाँखि चिड़ै मुनने अछि आँखि
सोझाँ मे अनवरत बसन्त झड़ै-ए।

कान्ह परक चुनमुन्नी फेर उदास आई
हमरो मन एहिना उदास रहै-ए।

परिवेशक ज्वाला मे छटपटा रहल
लोक सभक दुःखक इतिहास कहै-ए।

चाहै-ए मन ई बसात छाड़ि दी
चिनगी तरहत्थी मे धयल रहै-ए।

फाड़ल पन्ना जकाँ विखिन्न स्वर कतक
दु टोप नोर बड़ मन पड़ै-ए।

भोरे सँ सिहकल सिरमाक ई बसात
चानन्काठीकें मन सुनगबै-ए।

बगओ ई हवा हमर संकल्पक चामर
हमहूँ तैयार छी आब सहि ने होइ-ए।

हारल सन गीत कथा कहि ने होइ-ए।

विष-बंधन

एक एक क' अंक-अंक मे जोड़ि रहल छी
नगर खाता-बहीक खजाना कें प्रति दिन।

खूब चमत्कार अजब तमाशा बात विचित्र
खून खायल जाइत लागि रहलो पर कियैक
अनुभव सँ डर-भरल उदासी मे घेरायल
एक टा बौक स्तब्धता मे पाथर होइत दिन।
अनुभूति ई केहन अपन अछि केहन कठिन।

सोची तँ ई थिक मात्र द्रव्यक आत्म दया भरि
ई पुरा दुष्चक्र अर्थ-कामना प्रताड़ित
संभव इहो जे आबि गेलय ई मनें आजिज
एहि अभाव आघातें जीवन यापन ल'क'
एकहि व्यथा केर भास कहैं धरि गाबी प्रतिदिन।

कत'केन छी कोन दोसर घर चौखटि पर
हैं लगैत अछि सत्ये आइ ई बड़ कठिन
आबो बड़ किछु स्वप्न चढ़ल सवारी पर
पाँखि नै लोहक पंछी कें जे बिनु तेल उड़त
दाम ईंधनक हाल सेहो आकाश चढ़ल
तँ तँ सपना सीढ़ी-साँपक खेल भेलय
ऊँच चढ़ल कि साँप सँ गीड़ल जाइछ
प्रतिदिन।

जीवन धीरे-धीरे कोना बनल चल गेल-ए विष-बंधन।

आँखिक पोखरि सुखा गेल छैक

लोकक दुःखक कथा कहू की
के अछि कतेक उदास
गाछ जकाँ सब लोक ठाढ़ अछि
भुतियाएल छैक बाट।

लागल हाट बिकाइत सब किछु
रंग-बिरंगक माल

गीत नाद आ हल्ला गुल्ला
भरि बजार ई हाल

लोक ठाढ़ अछि कात मे गुमसुम
ल' क' खाली हाथ,
कीनत की वस्तु कत' सँ
हताश।

आँखिक पोखरि सुखा गेल छैक
कतहु ने भेंट फुलाएल
मनक गीतक बिसरल भनिता
एखन छैक कतौ सेहो हेराएल

आगक परिछनि गीत चुमाओन
बनल आंगन उदासी
सुखक सब गीतक बिसरल भास
लोककेर बौक बनल जीवन।



तय करी जे की करी

बड़ असह भेल-ए ई कंचकोह दिन
तहिना राति खकस्याह
आब किछु तय करी जे की करी।

रोपि अनेक सौ गाछ
झरकि गेल अछि
झुलसवा-फरबा सँ पहिनहि
झोंसाइ गेल अछि
फेर रोपी बोन, कत केहन गाछ
जान' पड़त से तत्काल
नवका फूल-फड़ लेल
आब किछु तय करी, जे की करी।

जेंकि बज्जर माटि जोति-कोड़ि
तैयार कयलौंहें/असमयक बाढ़ि
वा पानिक-पाथर दुआरे
बेकार भेलैहें/मौसिमक जे नेत
ठेंकक से बड़ मुदैया
रूखि एकर गोड़ी जोतक जल्दी
आब किछु तय करी, जे की करी।

लाल मेघ पीयर करिछौन करय
करेजक उत्साह पर पाथर धरय
अजोहें फल सन टुटल मनोरथक लेल
आब किछु तय करी जे की करी।

पहुँल पन्नाक मकड़जाली फाड़ि देलो पर
पसरल रेशमी महाजाल काटि देलो पर
पयर ओझरा जाइछ फेर सँ बाट मे
डेग जे रस्ते मे ओझरा जाइछ।

तेकरो भेद जानय लेल
आब किछु तय करी, जे की करी।

भ'कें धूर-झामर खसि पड़ी अचेत
वा अन्हरिया संग सेहो लड़ि मरी
से चेतना आनी,
भोर, सूर्यक रौद आ स्वाधीन
धरती-बसातक थ्यौत करबा लेल

आब किछु तय करी, जे की करी।



चेतना-गीत

जिनगी पहाड़ जुनि करू
रस्ता अन्हार जुनि करू
लुझू झुनकर बुधिबधिया
स्वार्थक छधि भरल पथिया
आब एना समय कें बेकार जुनि करू।

जहिना ओ कयलनिहें तबाह
हुनको होनि बापक बियाह
आब कोनो दोसर व्यवहार जुनि करू।

ओ तैं कहता किछु-किछु फेर
काटू गर्दनि भाइए केर
चेतू, अपनहि गला प्रहार जुनि करू।

जएह थिक पाँजि आ पाठि
सएह बनय धर्म आ जाति
जातिक नामें अपन संहार जुनि करू।

लोक सब एकहि होइ-ए
जे कोनो समाज जीबै-ए
एना सोति-बाभन आ राड़ जुनि करू।

भगवतीक थान थिक हमरे
मस्जिदोक अजान थिक हमरे
भेदक कोनो देवाल ठाड़ जुनि करू।

सलहेसक गीत गबैया
सबहक छथि कमला मैया
कोनो बाँट-बखरा आब आर जुनि करू।
परिपंची सबकें बुझियौ
तकर नष्ट बुद्धियो चिन्हियौ
हट्ठे विश्वास, खबरदार जुनि करू।

जिनगी पहाड़ जुनि करू
रस्ता अन्हार जुनि करू।

डूबल अन्हरिया मे प्राती

भरि-भरि आंजुर साँझ उदासी
डूबल अन्हरिया मे प्राती
भोर अभावें भरल आँचर
सुनइत कोनो समाद-

"आब सबहक दिन बदलै जायत
पेट भरि नेन्ना-भुटका खायत
बस्त्र सबकें हेतैक पहिरात्र
सभक घर नोंक सँ छाड़ल जायत।"

इ सुनि-सुनि गेल कान पथराय।
सुनय ने आब जरूरी बात
कान ततबा बनि चुकल बहीर
ठाड़ मतसुन्न बौक सब टोल
कहू की कतेक दुखी ई समाज।

मनुख पावनियो दिन उपास
कंठ मे तप्पत धह-धह प्यास
गामकेर सूखल अछि इनार
कहू की कतेक पियासल लोक।

ठाड़ अछि बिन पातक जे गाछ
माटि सँ माँगैत कहैन विकास
माटि सँ तकैत नव विश्वास।

हमर मन हमर मनोरथ केर घर

हमर मन हमरे मनोरथ केर घर
जाइ-ए के आब एकरा कत' छोड़ि।

ऋतु सब आबय करय बारंबार प्रणाम
देश हिन्दुस्तान छैक तकरे तं नाम

स्वयं समय जाय अबिक' एत' ठहरि
जाइ-ए के आब एकरा कतहु छोड़ि

एक सं एक नदी-निर्झरक स्वर्ग
नील नभ धरि हिमालय आंगन जकर

सात रंगक मेघ केर आंचर-कवच
जाइ-ए के आब एकरा कतहु छोड़ि

क्षप्रेम केर जे फसिल उपजाबैत माटि
नेह-न्यौछावर विकल संसार सँसे

भोर-संध्या मौं हमर ई राति भरि
जाइ-ए के आब एकरा कतहु छोड़ि

तोप बम-बन्दूक मे पगलाइत दुनिया
एकरा आन्हर सफर मे पड़ल दुनिया

आबओ एही ठाम सुस्ताय प्राण भरि
तेंहन अप्पन माटि जाय के कत' छोड़ि

मन कथा

बहुत दिन बीति गेल तैं
मन पड़ल अछि गाम
बहुत दिन बीति गेल तैं
मन पड़ल अछि नाम।

नाम-गामक एहन साँझ आ भोर
नाम-गामक एहन एकात्म पछोड़

नाम-गामक एहन जीऔ रूप
नाम-गामक एहन संबंधो अनूप

खुजि पड़ा गेल सएह अनुपम प्रिय चिड़ै सन

घूमि आयल पास मनक
गाम आ ओ नाम दुनू
एक रंग बनि गेल हुलास-

ऊपर सँ भारी-भारी,
अंतर मे जीवन किछु भेल
आनन्द सँ चैन।

एकहि बाटे

बाट पर किछु चेन्ह अछि
आँखि मे चित्रक नगर
चर-चांचर मन अछि, से
एक टा सुनसान घर
जाहि मे नहि क्यो रहल
आस नहि विश्वास नहि
ऋतुक हास-विलास नहि।

कंहन थकनी सँ बनल
ई क्लान्त देह, कंहन ऊबल
प्राण सँ बेचैन साँस कंहन
टूटल शक्ति केर एक-एक डेग
कतेक लघु ई हम, दुःख कतेक रास
भ'गेलय एही मनक
पाहुन हमर।

करी चिन्ता-सोच हम तैयो कियेक
अधिक लोकक एकहि संगक,
तनिक खिस्सा एकहि तरहक
छनि कियेक-
एहन कोन स्थिति-परिस्थिति ?

ई हमर जीवन।
मुदा हारू अहूँ जुनि,
अहाँक सन संताप मे अछि
एहि समाजक लोक लाखक लाख।

फेर बाजत बाँसुरी

जनै छी हम फेर बाजत बाँसुरी
दुःख आ संताप डूबल मन मे
फेर ऊठत धड़धड़ी।
फेर बाजत बाँसुरी।

ठुट्ठ गाछो फेर पनगत पोर-पोर
झरल पात सेहो धरत नव रूप हरियर
देत सूखल गाछ फेरो नव मज्जर
सुगंधि पसरत गाम मे आ भरि गली।

फेर सूर्यक किरण संगहि आँखि खोलत
भ्रमर उड़ि-उड़ि छुअत टटका सब कली
कोंढ़ मे छूटत फेरो सँ तरुण हृदयक
तार मे फेर कँपकँपी।
फेर बाजत बाँसुरी।

फेर सँ बदलत इजोरियाक स्वाद
फेर सिहरत प्रकृति पुरबा बसात
चली, दी चलि क्षितिज धरि, स्वागती हुलकी
आँखि मे अनुराग भरि क' रंग
दस डेग बढ़ी, लग चली
ऋतुक अभिनन्दन करी।

फेर बाजत बाँसुरी हम जनै छी
हृदय धुक-धुक करत जे अछि चुप बहुत दिन सँ
उठत, आ स्पर्श क' जायत कोनो जादुक छड़ी।

फेर बाजत बाँसुरी।



देहक बँसुली

तृप्तिकामी देह केर बाजल-ए बँसुली
सुनत सृष्टि आब जीवन केर महागान
विकल कण-कण
बहुत दिन सँ हमर प्राण।

सुरक व्याकुल गुंजनक प्रियतम निमंत्रण
वेदना साजल सुवासित ई परम मन
क' रहल अभिलषित
प्रिय प्रस्ताव, ध्यान।

ई धरा आकाश, जल आ पवन ज्वाला
भरि चलत प्रकृति फेरो उद्दाम प्याला
महासुख सँ मंत्र जन्मत
करत चेतन स्नान।

तृप्तिकामी देह केर बाजल-ए बँसुली
सुनत सृष्टि आब जीवन केर महागान।

अड़हूल फूलक गीत

बाड़ी भेल बाड़ी मे अड़हूलक गाछ भेल
हमरा दरबज्जा पर लाल सुरुज ठाढ़ भेल,

घास बोन हरियर तरकारी केर जंगल
अन्न फल फलहेरी सभ गेल उचंगल
किछुओ नहि दिन बदलल रहलौं पछुआयल
खगल केर खगले छी ओहिना रिनायल।
आब कनी दिन फीरल दिनक जे पसार भेल
हमरा दरबज्जा पर लाल सुरुज ठाढ़ भेल।

नित्यक पसाही आ पछबा मे हमर गाम
भेल गेल खक सियाह चुपचाप ठामे-ठाम
एक चारी धधकलए साँझे-परातें
बनि क' भुतहो गाछी ठहकलए हमर गाम
आब ससरफानी किछु हटलए अन्हरियाक
आब रक्त टुह-टुह रंग, आर कनी गाढ़ भेल
हमरा दरबज्जा पर लाल सुरुज ठाढ़ भेल।

सबटा निस्बद्द रहय लोक माल जालक थैर
भेल रहय बाधक ई बाट काँट कुशक बन
चौंछल भरि देह सँ बहैत छलैक पानि पानि
सोनित को भेलै लोक-देहक सेहो ने जानि
घूरब नहि, धार सुखा रूसि कहि गेल छल
आब लाल रंग-जल बहैत ग्राम-धार अछि।
हमर गामक मेघ मे लाल सुरुज ठाढ़ भेल।

बाड़ी भेल बाड़ी मे अड़हूलक गाछ भेल।